

भाव परमाणु सिद्धान्त

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

भाव भीतरी जगत का विषय है। यह चेतना से जुड़ा रहता है। चेतना प्रकाशमय है। बिना चेतना के सभी वस्तुएं निर्जीव रहती हैं। कर्मण शरीर, लिंग शरीर के कारण संसार होता है। कर्मण शरीर के कारण जीव एक गति से दूसरी गति में जाता है। आत्मा शुद्ध, बुद्ध, मुक्त है। परमाणु जड़ता प्रतिनिधित्व करता है। एक से दो मिलते हैं दो से तीन मिलने पर भौतिक वस्तुएं बनती जाती हैं। आत्मा और परमाणु पृथक-पृथक रहने पर शुद्ध है। राग-द्वेष के आकर्षण और विकर्षण के कारण एक-दूसरे से जुड़ाव और अलगाव बना रहता है। कर्म शरीर आत्मा को अशुद्ध बना देता है। राग-द्वेष के कारण आत्मा से कर्मों का संवेग होता है। भाव, विचार, शुद्ध और अशुद्ध दोनों प्रकार के हो सकते हैं। बुरे विचार नकारात्मक दृष्टि को बढ़ाते हैं। अच्छे विचारों से रचनात्मकता की वृद्धि होती है।

आत्मा सच्चिदानन्द स्वरूप है। सच्चिदानन्द का अर्थ है— सत्, चित्त और आनन्द। आत्मा और परमात्मा एक ही हैं। जीव की सत्ता इनसे पृथक है। जीव शरीर और भावों से युक्त होता है। जैसा विचारों का ताना-बाना वह बुनता है वैसा ही उसकी प्रकृति बन जाती है। भारत एक आध्यात्मिक देश है। यहां पर आत्मा, परमात्मा, जीव-जगत, बंधन, मोक्ष, कर्म और धर्म पर बड़ा गंभीर चिंतन किया गया है। विज्ञान भी यहां के चिंतन का विषय रहा है। किन्तु विज्ञान पर उतना बल नहीं दिया गया, जितना अध्यात्म पर। अध्यात्म के कारण ही भारत को विश्वगुरु कहा जाता है। इस देश में जन्म लेने वाला प्रत्येक व्यक्ति अपने चरित्र के द्वारा अन्य देशवासियों को शिक्षा देता है। विवेकानन्द का यह महावाक्य की भारत के लोग वस्त्र से नहीं बल्कि चरित्र से ऊँचे होते हैं। चरित्र ही व्यक्ति को महान बनाता है। चरित्र की पूजा तभी होती है जब मनुष्य में सदगुण हो।

सद्गुण ही सबसे बड़ा धर्म है। जब आत्मा, परमात्मा, जीव-जगत की बात की जाती है तो सहज में ही हमारा चिंतन दर्शन की ओर जाता है। भारत में दर्शन की अनेक शाखाएं हैं। सभी

शाखाओं में अध्यात्म पर चिंतन किया गया है। भारतीय दर्शन आत्मवादी, कर्मवादी एवं पुनर्जन्मवादी है। संसार का प्रत्येक प्राणी अपने आपमें एक आत्मा है और कर्मों से बद्ध है, आवृत है। कर्म पुनर्जन्म का मूल कारण है। तत्त्वमीमांसा की दृष्टि से आत्मा का अस्तित्व अनादिकालीन है, स्वतंत्र है, वास्तविक है और एक द्रव्य या वस्तु के रूप में है। आत्मा या जीव अस्तिकाय है। प्रत्येक आत्मा असंख्य 'प्रदेशों' का पिण्ड है। प्रत्येक आत्म-प्रदेश के साथ कर्म पुद्गलों का संयोग होता है और कर्म के द्वारा उत्पन्न प्रभाव से आत्मा एक जन्म से दूसरे जन्म में गमन करती रहती है। कर्म अपने आपमें जड़ है फिर भी आत्मा के साथ बद्ध होने से उनमें आत्मा को प्रभावित करने की शक्ति उत्पन्न हो जाती है।

कर्म को हम 'चैतसिक भौतिक बल' के रूप में मान सकते हो। यही बल आत्मा को पुनर्जन्म लेने के लिए बाध्य करता है। अनादिकाल से प्रत्येक जीव (आत्मा) जन्म-मरण की शृंखला से गुजरता हुआ अपना अस्तित्व बनाए रखता है। यही आत्मवाद और पुनर्जन्मवाद का सिद्धान्त है। आत्मा का लक्षण है—चैतन्य। कोई भी आत्मा चाहे वह मुक्त हो या संसारी, चैतन्य से रहित नहीं होती। आत्मा नानाविध शरीरों को धारण करती है और नानाविध योनियों में अनुसंचरण करती है, बार-बार जन्म-मरण करती है। इसे संसारी आत्मा कहा जाता है। कर्मोपाधिनिरपेक्ष जीव पारिणामिक भावयुक्त आत्मा मुक्त अथवा सिद्ध कही जाती है। शरीर मुक्त होने के कारण वह आत्मा अमूर्त होती है। इसलिए वह न शब्द गम्य है और न तर्क गम्य। वह बुद्धि के द्वारा अग्राह्य है।

आत्मा पुद्गल गुणों से रहित है। उसमें स्त्री-पुरुष आदि लिंगभेद नहीं होता। आत्मा अमूर्त और सूक्ष्मतरंग है, इसलिए वह शब्द के द्वारा प्रतिपाद्य नहीं है— **यतो वाचो निवर्तन्ते, अप्राप्य मनसा सह, आनन्दः ब्रह्मणो विद्वान्, न विभेति कदाचन।** आत्मा तर्क के द्वारा भी ग्राह्य नहीं है। वह बुद्धि की सीमा से भी परे है। अमूर्त तत्त्व शब्दों का, तर्कों का और बुद्धि का विषय नहीं बनता। दर्शन के क्षेत्र में आत्मा और पुनर्जन्म का विषय बहुत मौलिक और प्रभावोत्पादक है। न केवल भारतीय दार्शनिकों ने अपितु पाश्चात्य दार्शनिकों ने भी इस विषय पर गहन चिन्तन

किया है। आधुनिक विज्ञान और मनोविज्ञान के संदर्भ में भी इस विषय पर शोधात्मक कार्य हो रहा है।

परामनोविज्ञान की चार मान्यताएं हैं—टेलीपैथी, अतीन्द्रिय दृष्टि, पूर्वाभास विचार सम्प्रेषण दूरस्थ वस्तु को शक्ति बल से पास लाना। परामनोविज्ञान की इन मान्यताओं का पुनर्जन्म के सिद्धान्त के साथ तुलनात्मक विश्लेषण से यह तथ्य स्पष्ट होता है कि कोई ऐसा तत्त्व भी है जो अभौतिक है, जिसमें अनेक मानसिक शक्तियां व आध्यात्मिक सच्चाइयां व्यक्त करने की क्षमता है। मृत्यु केवल स्थूल शरीर को ही समाप्त करती है, सूक्ष्म शरीर मरणोपरान्त भी विद्यमान रहता है। वैज्ञानिक पदार्थ की चार अवस्था मानते हैं। ठोस, द्रव्य, गैस व प्लाज्मा। एक अवस्था और खोजी गई जिसे प्रोटोप्लाज्मा या जैवप्लाज्मा कहा जा सकता है। अध्यात्म—योग की भाषा में यह हमारी प्राणशक्ति है। जो प्रोटोप्लाज्मा है और हमारे अस्तित्व का सटीक प्रमाण है।